

| | | | | | |
|---------|--------|-----------|----------|---------|-----------|
| ١- | عظيمة | بالحقيقة | كرامتك | يا | قديسة |
| قد | صرت | رفيقة | لشهداء | | الكنيسة |
| ٢- | عظيم | بالحقيقة | أيضا | | اجتهادك |
| قد | صرت | عريقة | فى | كل | أمجادك |
| ٣- | طوباك | يا | دميانة | | الشهيدة |
| عذاباً | كثيراً | نلت | من | الجنود | العنيدة |
| ٤- | طوباك | يا | دميانة | | القديسة |
| عذاباتك | | مسمية | وأكاليك | | نفيسة |
| ٥- | أيتها | العفيفة | دميانة | | المختارة |
| الجنود | | العنيفة | منك | صارت | محتارة |
| ٦- | تركت | الأرضيات | وكل | ما | فيها |
| وغويت | | السماويات | و | أحبيت | أقاصيها |
| ٧- | أحبيت | البتولية | وأنت | كنت | صغيرة |
| فى | سن | الطفولية | يا | نجمة | منيرة |
| ٨- | أحبيت | الطهارة | أيتها | | القديسة |
| وصرت | | كمنارة | للأولاد | | الكنيسة |
| ٩- | أحبيت | الانعزال | عن | الجبلة | البشرية |
| وتحليت | | بالكمال | كالطقوس | | النورانية |
| ١٠- | أحبيت | البرارى | وسكنت | | نواحيها |
| وأیضا | الرب | البارى | اسطع | نورك | فيها |
| ١١- | طلبت | من | برجاً | | منفرداً |
| لتعبدى | | باريك | وتركت | العالم | اجمع |
| ١٢- | فأجاب | لك | وبنى | لك | جمالاً |
| حسب | سؤال | قلبك | للتسايبح | قصرأ | والتراتيل |
| ١٣- | اخترت | أربعين | موصوفات | | بالطهارة |
| وظفرتن | | بالنعمة | ونطقتن | | بمهارة |
| ١٤- | حتى | جعلتن | من | أفعالكن | مخزية |
| لما | تبعتن | المعبود | يا | بكر | ونقية |
| ١٥- | وأیضا | مرقس | لما | تبع | الكافر |
| ردتيه | | بمعانيك | ولفظك | | الباهر |
| ١٦- | طوباك | طوباك | يا | من | تعاليت |
| انيرينى | | بضياك | لأنك | | قويت |
| ١٧- | طوباك | طوباك | يا | من | انتصرت |
| اقبلىنى | فى | حماك | لأنك | | ظفرت |
| ١٨- | سألت | أنا | من | بكرة | نقية |
| تكون | لى | صدر | خين | تى | سينتيليا |
| ١٩- | سألت | أنا | من | بكرة | وبتول |
| ان | ترفع | خطواتى | وتساعدنى | حين | أقول |
| ٢٠- | تفسير | اسمك | كل | | المؤمنين |
| الكل | يقولون | يا | دميانة | أعنا | أجمعين |